20. प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

संगठन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रभावशाली रूप से प्राप्त करने के लिए संगठन और व्यक्ति-विशेष की सक्षमताओं व क्षमताओं को विकसित करने तथा उनमें निरंतर सुधार लाने के लिए एक सुनियोजित दृष्टिकोण अपनाये जाने की आवश्यकता होती है। मानव संसाधन किसी भी संगठन के काफी महत्वपूर्ण, अहम और गत्यात्मक संसाधन होते हैं। गत वर्षों के दौरान मानव संसाधन प्रबंधन कार्यों में भारी परिवर्तन आए हैं। संगठन प्रबंधन अब कार्मिकों के विकास पर खासा ध्यान देने लगे हैं। इस बात को पुरजोर रूप से मान्यता दी जा रही है कि संगठन में कोई भी व्यक्ति-विशेष एक मुख्य संसाधन होता है और इसलिए उसे एक लागत के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह भी वास्तविकता है कि उपयुक्त प्रशिक्षण व विकास कार्यक्रमों के जरिए कर्मियों के कौशल, ज्ञान और अभिक्षमता के आधार पर उनकी सक्षमता को समय-समय पर बढ़ाये जाने की आवश्यकता होती है। कोई भी कर्मचारी तब और अधिक दक्ष व कुशल बनता है, जब उसे प्रशिक्षण आवश्यकता और सक्षमता अंतरालों के अनुसार प्रशिक्षित किया जाता है। भाकृअनुप के सभी श्रेणी के कर्मियों को प्रशिक्षण दिए जाने और उनका क्षमता विकास किए जाने में सुविधा देने हेतु सितंबर 2014 में एचआरएम इकाई की स्थापना की गई, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य थे : (i) परिषद के लिए प्रशिक्षण और मानव संसाधन (एचआर) नीति आवश्यकताओं का समग्र रूप से समन्वयन, निगरानी, कार्यान्वयन और प्रबंधन करना, (ii) परिषद की समस्त कार्यनीतिपरक एचआर आवश्यकताओं व जरूरतों का आकलन करना और सलाह देना।

वर्ष 2015-16 के दौरान भाकृअनुप के कर्मियों को प्रशिक्षण देने तथा उनका क्षमता विकास करने के लिए अनेक पहलें की गईं। इस दिशा में प्राप्त उपलब्धियां निम्नवत हैं :

एचआरडी नोडल अधिकारियों का नामांकन

संस्थान स्तर पर प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावकारी कार्यान्वयन के लिए भाकृअनुप के समस्त 108 संस्थानों ने अपने संस्थान के लिए एचआरडी नोडल अधिकारी नामित किए। एचआरडी नोडल अधिकारियों ने उपयुक्त प्रशिक्षणों के आयोजन के साथ प्रशिक्षण आवश्यकता मूल्यांकन (टीएनए) के आधार पर, विभिन्न श्रेणी के कर्मियों के लिए वार्षिक प्रशिक्षण योजना (एटीपी) तैयार की। उन्होंने एटीपी के प्रभावशाली कार्यान्वयन की भी सुनिश्चितता की।

ईआरपी प्रणाली में प्रशिक्षण विवरणों के डाटाबेस का विकास

सभी कर्मियों के प्रशिक्षण विवरण के परिपूर्ण डाटाबेस की उपलब्धता प्रशिक्षण आवश्यकताओं/अंतरालों का निर्धारण करने के लिए एक औचित्यपूर्ण बैकअप सुलभ कराता है और वर्तमान एवं भावी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियोजन करने में सहायता करता है। इस ईआरपी प्रणाली में लगभग 2,710 (54.5%) वैज्ञानिकों, 585, (10.5%) तकनीकी कर्मिकों, 443 (11.5%) प्रशासनिक कार्मिकों और 73 (1.3%) दक्ष-सहायक कर्मचारियों (एसएसएस) के पूर्ण प्रशिक्षण विवरण उपलब्ध हैं। सभी कर्मियों के प्रशिक्षण का पूर्ण डाटाबेस आगामी समय में उपलब्ध होगा।

प्रशिक्षण आवश्यकता/कौशल अभाव वाले क्षेत्रों की पहचान

भाकृअनुप में पहली बार सभी श्रेणियों के कर्मियों की प्रशिक्षण आवश्यकता/कौशल अभाव का आकलन किया गया। भाकृअनुप के लगभग सभी संस्थानों ने अपने विभिन्न श्रेणी के कर्मियों के लिए प्रशिक्षण/कौशल अभाव वाले क्षेत्रों की पहचान की और वैज्ञानिकों के लिए 128 प्रशिक्षण क्षेत्र, तकनीकी कर्मियों के लिए 87 क्षेत्र, प्रशासनिक कर्मियों के लिए 49 क्षेत्र तथा दक्ष-सहायक कर्मचारियों (एसएसएस) के लिए 36 क्षेत्रों की पहचान की। इस प्रकार की प्रक्रिया पहली बार अपनाए जाने

2015-16 के दौरान आयोजित विभिन्न वर्गों के लिए प्रशिक्षण

एसएमडी/ भाकृअनुप (मु.)	प्रशिक्षण प्राप्त किए गए कर्मियों की संख्या					प्रशिक्षण प्राप्त किए कर्मियों का प्रतिशत				
	वैज्ञानिक	तकनीकी	प्रशासनिक	एसएसएस	कुल	वैज्ञानिक	तकनीकी	प्रशासनिक	एसएसएस	कुल
फसल विज्ञान	379	197	87	112	775	23.9	13.2	10.0	7.5	14.3
बागवानी विज्ञान	227	142	95	116	580	31.4	18.6	22.0	17.1	22.4
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	236	158	77	93	564	30.4	18.8	15.3	11.7	19.3
कृषि शिक्षा	42	18	29	23	112	72.4	32.7	52.7	59.0	54.1
कृषि अभियांत्रिकी	85	53	21	32	191	34.3	13.9	9.5	13.9	17.7
पशु विज्ञान	232	61	98	68	459	29.9	7.2	15.9	4.3	12.0
मात्स्यिकी विज्ञान	172	114	64	193	543	32.3	19.9	18.6	38.1	27.7
कृषि विस्तार	31	4	13	0	48	68.9	10.5	15.3	0.0	27.0
भाकृअनुप मुख्यालय	34	16	124	0	174	42.0	18.0	22.8	0.0	22.1
कुल	**1438**	**763**	**608**	**637**	**3446**	**29.8**	**15.0**	**16.6**	**11.8**	**18.1**

वर्ष 2015-16 के दौरान विभिन्न विषय-वस्तु विभागों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

एसएमडी/भाकृअनुप (मुख्यालय)	वैज्ञानिक	तकनीकी	प्रशासनिक	एसएसएस	समस्त कर्मी
फसल विज्ञान	81	42	18	29	170
बागवानी विज्ञान	25	09	08	09	51
प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन	45	11	04	03	63
कृषि शिक्षा	42	07	02	04	55
कृषि अभियांत्रिकी	32	09	18	01	60
पशु विज्ञान	59	08	05	09	81
मात्स्यिकी विज्ञान	24	08	05	07	44
कृषि विस्तार	11	03	00	00	14
भाकृअनुप मुख्यालय	04	04	15	00	23
	323	**101**	**75**	**62**	**561**

से नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और अधिक बेहतर ढंग से रूपरेखा देने व विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

प्रशिक्षण आवश्यकताओं के आधार पर वार्षिक प्रशिक्षण योजना (एटीपी) का विकास

भारत सरकार की राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति-2012 के अनुसार, प्रशिक्षण आवश्यकता आकलन के आधार पर वार्षिक प्रशिक्षण योजना (एटीपी) बनाया जाना आवश्यक है। भाकृअनुप संस्थानों/भाकृअनुप (मुख्यालय) द्वारा चिन्हित प्रशिक्षण आवश्यकताओं/कौशल अभाव वाले क्षेत्रों के आधार पर तैयार की गई वार्षिक प्रशिक्षण योजना के माध्यम से प्रशिक्षण के लिए सुनियोजित दृष्टिकोण अपनाया गया। वर्ष 2015-16 के लिए कुल 86 भाकृअनुप संस्थानों/भाकृअनुप (मुख्यालय) ने अपने वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मियों के लिए वार्षिक प्रशिक्षण योजना तैयार की हैं। भाकृअनुप में इस प्रकार की प्रक्रिया को पहली बार लागू किया गया है।

वरिष्ठ कर्मिकों के लिए नेतृत्व क्षमता विकास कार्यशालाएं

संगठन की प्रगति के लिए मानव संसाधन विकास (एचआर) का प्रभावशाली प्रबंधन, विशेषकर भाकृअनुप जैसे ज्ञान सघन आर एंड डी संगठन के लिए काफी अहम व महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति-विशेष की जिम्मेदारियों और कर्त्तव्यों का निर्वहन करने हेतु उसकी कार्यदक्षता, सक्षमता व प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रमों या कार्यशालाओं आदि में सहभागिता कर उसके कौशल, ज्ञान व प्रतिभा को बढ़ाए जाने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, इस प्रकार के क्रियाकलापों से संगठन के उत्थान के साथ-साथ व्यक्ति-विशेष के विकास के लिए लर्निंग अवसर भी प्राप्त होते हैं। अत:, कार्यस्थल पर कर्मियों के प्रबंधन के द्वारा संगठन की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप द्वारा 6 लीडरशिप कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें 95 डेयर/भाकृअनुप/एएसआरबी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सहभागिता की। इन कार्यशालाओं का आयोजन एनएएआरएम, हैदराबाद के सहयोग से किया गया था।

कर्मियों का कार्यालय में प्रशिक्षण

भाकृअनुप (मुख्यालय) के प्रशासनिक कर्मियों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप (मुख्यालय) में कोई वित्तीय बोझ बढ़ाए बिना पहली बार साप्ताहिक (एक घंटा प्रतिदिन प्रति सप्ताह) अंतर-कार्यालय प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिनमें 107 अनुभाग अधिकारियों और सहायकों ने भाग लिया।

तकनीकी कर्मियों/आशुलिपिकों के लिए नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की परिकल्पना और विकास

वित्तीय कर्मियों के लिए चिन्हित प्रशिक्षण आवश्यकता/कौशल अभाव वाले क्षेत्रों के आधार पर भाकृअनुप के 16 अग्रणीय एवं सक्षम संस्थानों ने नए प्रशिक्षण कार्यक्रमों (60) को पहली बार डिजाइन व विकसित किया।

भाकृअनुप (मुख्यालय)/संस्थानों के ग्रेड-III के आशुलिपिकों, वैयक्तिक/निजी सहायकों, निजी सचिवों और प्रधान निजी सचिवों के लिए अलग से उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए गए। एनएएआरएम, हैदराबाद द्वारा नए प्रशिक्षण कार्यक्रम 'कार्यदक्षता और संव्यवहारात्मक कौशलों का संवर्धन' को डिजाइन और विकसित करने हेतु पहली बार कदम उठाया गया।

कर्मियों का प्रशिक्षण और क्षमता विकास

वर्ष 2015-16 के दौरान कुल 3,446 कर्मियों ने विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास कार्यक्रमों में भाग लिया, जिनमें वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक तथा वित्त एवं दक्ष-सहायक कर्मचारियों की संख्या क्रमश: 1438, 763, 608 और 637 थी।

वर्ष 2015-16 के दौरान फसल विज्ञान प्रभाग ने सबसे अधिक वैज्ञानिकों (379) और तकनीकी कर्मियों (197) को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भेजा, जबकि विभिन्न क्षमता विकास कार्यक्रमों के लिए भाकृअनुप (मुख्यालय) ने सबसे अधिक (124) प्रशासनिक कर्मियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा। मात्स्यिकी विज्ञान प्रभाग ने अपने विभिन्न संस्थानों में सबसे अधिक (193) दक्ष-सहायक कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा। कुल मिलाकर, भाकृअनुप प्रणाली में प्रशिक्षण दिए गए कुल 3,446 कर्मियों में, फसल विज्ञान प्रभाग (775) तथा उसके बाद बागवानी विज्ञान प्रभाग (580) द्वारा सबसे अधिक कर्मियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

वैज्ञानिकों (29.8%), तकनीकी कर्मियों (15.0%), प्रशासनिक कर्मियों (16.6%) तथा वित्त एवं सहायी कर्मचारियों (11.8%) को उनके प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के अनुसार, विभिन्न आयामों में वर्ष 2015-16 में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि वर्ष 2013-14 की तुलना में,

वर्ष 2015-16 के दौरान क्रमशः 7.7 और 11.1 प्रतिशत तकनीकी एवं दक्ष-सहायक कर्मचारियों ने अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

भाकृअनुप के बढ़े प्रभागों में, बागवानी विज्ञान प्रभाग (22.4%) तथा उसके बाद एनआरएम प्रभाग (19.3%) में उन कर्मियों का प्रतिशत सबसे अधिक था, जिन्होंने प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास कार्यक्रमों में भाग लिया था। संवर्ग पदस्थिति की तुलना में, कृषि शिक्षा प्रभाग ने सबसे अधिक वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मियों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए भेजा, जिनका समग्र प्रतिशत 54.1% है।

वर्ष 2015-16 के दौरान वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मियों तथा वित्त एवं दक्ष-सहायक कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रमों की संख्या क्रमशः 323, 101, 75 और 62 थी।

फसल विज्ञान प्रभाग ने वर्ष 2015-16 के दौरान सभी श्रेणियों के कर्मचारियों सहित वैज्ञानिकों (81), तकनीकी कर्मियों (42), प्रशासनिक कर्मियों (18) और दक्ष-सहायक कर्मचारियों (29) के लिए सबसे अधिक प्रशिक्षण अयोजित किए और उसके प्रशिक्षणों की समग्र अधिकतम संख्या 170 है।

❑